

## आलस्य भ्रम

10-12-21

प्र:- बिना युद्ध क्षेत्र गए लेखक का जीवन क्या मनेबय सिद्ध हुआ।  
उत्तर:- बिना युद्ध क्षेत्र गए लेखक का अस्पताल की चारपाई पर सोने का मनेबय सिद्ध हो गया।

2:- जीवन ही मज में सोने जाते आलसी को मार्ग में जीवन मिला?

उत्तर:- जीवन ही मज में सोने जाते आलसी को मार्ग में एक अमीर औरत

3:- लेखक ऐसा क्यों मानते हैं कि मानव शरीर आलस्य के लिए ही बना है?

उत्तर:- लेखक मानते हैं कि मानव शरीर आलस्य के लिए ही बना है क्योंकि बारी स्त्री जीवों के बच्चे पैदा होने के कुछ समय बाद ही चलने लग जाते हैं लेकिन मनुष्य के बच्चों को चलने के लिए काफी समय लगता है। और दूसरा कारण है कि ईश्वर ने मानव की पीठ चारपाई पर आश्रम करने के लिए चौड़ी बनाई है ताकि वहाँ पीठ के बल आश्रम कर सके।

4- महिला के घर जाने से इनकार करते हुए आलस्यचार्य क्या कहा?

उत्तर:- महिला के घर जाने से इनकार करते हुए आलस्यचार्य ने कहा, मैं तो पैरले से ही जानता था कि आप मेरी सहायता नहीं कर सकेगी और आपने वृद्धा मेश समय नष्ट किया, नहीं तो मैं अभी तक आनंद भवन में प्रवेश कर चुका होता।

14.12.2021

## समास

**परिभाषा** - दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं।

या

परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक पदों (शब्दों) के मेल को समास कहते हैं।

समास का शाब्दिक अर्थ होता है - संक्षेप

इस प्रक्रिया या विधि से जो शब्दों को समस्त-पद या समाहित शब्द कहा जाता है।

जब समस्त पदों को अलग-अलग किया जाता है तो उसे समास विग्रह कहा जाता है।

**उदाहरण** - गंगाजल - समस्त-पद - गंगाजल

समासविग्रह - गंगा का जल

नीलांबर - समस्त पद - नीलांबर

समास-विग्रह - नीला है जो अंबर

**समास के प्रकार** -

समास मुख्यतः दू. प्रकार के होते हैं -

1. अव्ययीभाव समास
2. सन्धिरूप समास
3. समन्वय समास
4. द्विवचन समास
5. द्वन्द्व समास
6. बहुव्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास - जिस समास में पहला पद अव्यय हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें पहला पद प्रधान होता है।

समस्त पद

संज्ञा विग्रह

भावनक

जन्म भर

संश्लेष

रक्त ही रक्त में

यथाशीघ्र

नितना बीघ्र से

बीचोंबीच

बिल्कुल बीच में

2. सत्पुरुष समास - इसमें उत्तर पद प्रधान और पूर्व पद गौण होता है।  
 जैसे - रामोद्धार - रामोद्धार के लिए घर।  
 इसमें विशेषज्ञों या काम चिह्नों का लोप होता है, कमी-कमी बचि में आने वाले अनेक पदों का भी लोप हो जाता है।  
 सत्पुरुष समास के 6 भेद होते हैं।

कर्म सत्पुरुष समास

करण सत्पुरुष समास

सम्प्रदान सत्पुरुष समास

आपोदान सत्पुरुष समास

संज्ञान्ता सत्पुरुष समास

अचिक्ररण सत्पुरुष समास

1. कर्म सत्पुरुष समास (प्र.)

समस्त पद

समास विग्रह

ग्राम्यात

ग्राम को गया हुआ

वनगमन

वन को गमन

2. करण सत्पुरुष समास (मे, के, द्वारा)

स्वरचित

समास - विग्रह

शोकगुस्त

श्व द्वारा रचित

शोक से गुस्त

शोक से गुस्त

3. सम्प्रदान सत्पुरुष समास (के लिए)

समस्त पद

समास - विग्रह

स्तथागृह

स्तथा के लिए आगृह

पक्षिशाला

पक्ष के लिए शाला

4. आपोदान सत्पुरुष समास (से) (अलग होता)

समस्त पद

समास - विग्रह

रजविमुख

रज से विमुख

पापमुक्त

पाप से मुक्त



5. अमृतस्य तत्पुरुष समास (आ, मे, मी)

अमृत पद	समास-विग्रह
लोमसंज्ञ	लोम का संज्ञ
शिवानय	शिव का आनय

6. अधिभरण तत्पुरुष समास (मे, पर)

अमृत पद	समास-विग्रह
मार्गकुशल	मार्ग में कुशल
दानवीर	दान में वीर

7. तत्र तत्पुरुष समास - नव तत्पुरुष समास के पहला पद विशेषण होता है।

अमृत पद	समास-विग्रह
अमर	न मर
अमन्य	न सत्य

परिभाषा - किसी विषय पर मन में आने वाले भावों और विचारों के वाक्यों में लिखना अनुच्छेद लेखन कहलाता है।

अनुच्छेद लेखन में शब्दों में कुछ ध्यान देने योग्य बातें -

अनुच्छेद की भाषा सरल होनी चाहिए।

इसमें वाक्य छोटे-छोटे होने चाहिए।

विषय से संबंधित सभी व प्रमुख बिंदुओं को अनुच्छेद में समझाने का प्रयास करना चाहिए।

यदि शब्द सीमा दी गई हो तो उसका पालन करना चाहिए।

अनुच्छेद लेखन के शुरु में पहली लाइन में दो उद्देश्यों के बराबर स्थान का अंतर होना चाहिए।

शीघ्र बात रोक दी अनुच्छेद में पूरी हो जाती चाहिए।

अगर संकेत बिंदु दिए गए हों तो उनका ध्यान रखते हुए अनुच्छेद लिखना चाहिए।

दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित विषय पर 20 से 30 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए।

1. पुस्तकों का महत्व -

संकेत बिंदु - प्रश्न हमारी निरति, फुलने हमारे प्रेरणा के स्रोत विम्वर का आधार, मनोरंजन का साधन

2. आदर्श विद्यार्थी -

संकेत बिंदु - अच्छे विद्यार्थी के गुण, लगन और परिश्रम, सादर विनम्रता अनुशासन प्रियता स्वास्थ्य

### Word Matching

प्रेरणा - Inspiration	गुण - Quality
स्रोत - Source	लगन - Concentration
विकास - Development	सादा - Simple
आधार - Base	विम्वर - Politeness
मनोरंजन - Entertainment	अनुशासन - Discipline
साधन - Means	स्वास्थ्य - Health

5. निपात शब्द - जो अव्यय या सन्निहारी शब्द किसी शब्द के बाद लगाकर उसके अर्थ को बताने में मदद करते हैं, वे निपात कहलाते हैं। यह शब्द किसी बात पर जोर देने के लिए प्रयोग किये जाते हैं। जैसे - ही - भी, ही तो, भी, तो, मात्र।

उसने मुझसे बात तक नहीं की।

दीवार के अन्दर भी दरवाजा खोला गया।

हमने ही यह कार्य पूरा किया है।

उदाहरण -

1. वह खुशी के मोरे चिल्लाते लगा (संबंधबोधक)
2. दोस्तों! प्रधानमंत्री जी आ रहे हैं। (विस्मयबोधक)
3. मोहन के साथ एक साथ ही थी। (संबंधबोधक) (निपात)
4. भूख और थकान एक साथ नहीं निकल सकते (समूहबोधक)
5. उसने मोहन की परामर्श देना। (समूहबोधक)
6. मैं तो नहीं जा पाऊंगा केवल मोहन ही दिल्ली जा रहा। (निपात)
7. छोटा बच्चा माँ की ओर देख रहा है। (संबंधबोधक)
8. शोभा! तुम्हें बहुत अच्छा काम किया। (विस्मयबोधक)
9. दुकान के पीछे मेरा घर है। (संबंधबोधक)
10. पंखिल के बिना मैं चित नहीं बनाऊँ। (संबंधबोधक)



## आत्मस्थ भ्रम

10-12-21

- प्र- बिना युद्ध क्षेत्र गए लेखक का जीवन था मनेव्य विद्वत् हुना।
- उत्तर- बिना युद्ध क्षेत्र गए लेखक का अस्पताल की चारपाई पर सोने का मनेव्य विद्वत् हो गया।
- प्र- जीवन ही मनु में सोने जाते आत्मजी के मार्ग में जीवन मिला?
- उत्तर- जीवन ही मनु में सोने जाते आत्मजी के मार्ग में एक अमिष जीवन
- प्र- लेखक ऐसा क्यों मानते हैं कि मानव शरीर आत्मस्थ के लिये ही बना है?
- उत्तर- लेखक मानते हैं कि मानव शरीर आत्मस्थ के लिये ही बना है क्योंकि बारी सही जीवों के अच्छे पैदा होने के कुछ समय बाद ही चलने लग जाते हैं लेकिन मनुष्य के अच्छों को चलने के लिये अभी समय लगता है। और दूसरा कारण है कि ईश्वर ने मानव की पीठ चारपाई पर अश्रम करने के लिये चौड़ी बनाई है ताकि वह पीठ के बल आश्रम कर सके।
- प्र- महिला के घर जाने से इन्कार करते हुए आत्मस्थार्थ क्या करा?
- उत्तर- महिला के घर जाने से इन्कार करते हुए आत्मस्थार्थ ने कहा, मैं तो पहले से ही जानता था कि आप मेरी सहायता नहीं कर सकेगी और आपने वृथा मेरा समय नष्ट किया, नहीं तो मैं इसी तक आनन्द भवन में प्रवेश कर चुका होता।

पृष्ठ-16

## दूरी दूरी दूज पर

- क) दूरी दूरी दूज पर अविता के स्वधित्त में न हँ ?  
दूरी दूरी दूज पर अविता के स्वधित्त में श्री अरुण बिहारी वाजपेयी जी हैं।
- ख) श्री अरुण बिहारी वाजपेयी जी के बारे में आप क्या क्या जानते हैं ?  
श्री अरुण बिहारी वाजपेयी जी हमारे पूर्व प्रधानमंत्री के साथ-साथ अवि, गीतकार तथा व्याख्याता भी थे।
- ग) अवि उमने सूर्य को नमस्कार क्यों नहीं करता चाहते हैं ?  
सूर्य का उठना जो बाह्यगत रूप है कि उसे जोर से उठना है। इसलिए अवि उमने सूर्य को नमस्कार नहीं करता चाहता।